नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 23.08.2021

प्रकाशनार्थ

भारत के प्राचीन धर्मशास्त्रों एवं साहित्यों में ज्ञान विज्ञान, ज्योतिष–गणित, चिकित्सा–रसायन आदि के अथाह भण्डार संचित हैं। भारतीय मनीषियों ने अपने इन संचित ज्ञान भण्डारों का उपयोग समस्त मानव–जाति के लिए बिना किसी भेद–भाव के किया। इन्ही ऋषि महर्षियों के ज्ञान को आधार बना पश्चात्य जगत आज अपनी भौतिक उपलब्धियों पर इतराता है। उन उपलब्धियों को अपनी स्वयं की खोज बताता है। हमारा प्राचीन वैदिक ज्ञान चूँकि श्रुति आधारित था, इसलिए समय के साथ–साथ उसका अधिकांश हिस्सा समाज में विस्मृत कर दिया गया। यदि हमें आज विश्व सिर–मौर और विश्वगुरु बनना है, तो निश्चित रुप से हमें अपने प्राचीन ज्ञान की जड़ों को खोजना ही होगा।

उक्त बातें आई.आई.टी.बी.एच.यू. के रसायन शास्त्र विभाग के आचार्य **डॉ. वी. रामानाथन** नें महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर द्वारा आयोजित **राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ स्मृति सप्तदिवसीय ऑनलाइन व्याख्यान–माला** के उद्घाटन अवसर पर बतौर मुख्य वक्ता के रूप में कही। अपने निर्धारित विषय **'पास्कल से पूर्व पास्कल त्रिभुज'** पर बोलते हुए उन्होंने आगे कहा कि ज्ञान की जिस विद्या में भारत ईसा की पूर्व शताब्दियों में ही सिद्ध–हस्त हो चुका था, उसी ज्ञान का उपयोग कर पाश्चात्य जगत ने 15वीं–16वीं शताब्दी में अपने को परिष्कृत कर अपनी श्रेष्ठवादिता का प्रवर्तन किया। **छन्दशास्त्र, ग्रन्थरत्नाकर, पिंगलछन्दशास्त्र, सुश्रुत संहिता, काशिकावृत्ति** इत्यादि ऐसे वैदिक साहित्य हैं, जिन्हे आधार बनाकर पाश्चात्य संस्कृतियों ने अपनी हनक स्थापित की। चूँकि भारत लम्बे समय तक विदेशी आधिपत्य में रहा, इसलिए भारतीय ज्ञान स्रोतों को बड़े पैमाने पर नष्ट किया गया। जिस ज्ञान का प्रतिपादन भारतीय विद्वानों ने किया, उसका श्रेय पाश्चात्य जगत के तथाकथित दार्शनिकों, विचारकों एवं विद्वानों नें लूट लिया। हम **महर्षि पिंगल** का ही उदाहरण लें, तो पायेंगे कि उनके द्वारा गणित, ज्योतिष, भाषा एवं व्याकरण के क्षेत्रों में जो सिद्धांत स्थापित किए गये आज भी पीढ़ी उसके प्रतिपादक के रूप में पाश्चात्य विद्वान पास्कल को पढ़ती है। इससे बड़ा दुर्भाग्य इस देश का और क्या हो सकता है कि हमारी वर्तमान और आने वाली पीढ़ी अपनी पुरातनता, संस्कृति, परम्परा, पुरातन ज्ञान और दर्शन के विषय में अनभिज्ञ है। युवा पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ में दौड़ रहा है

और प्रौढ़ समाज जो अपने प्राचीन ज्ञान वैभव से वाकिफ है, वो आने वाली पीढ़ी में उन संस्कारों और ज्ञान के संवहन के प्रति उदासीन है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही **गुरूश्री गोरखनाथ स्कूल ऑफ नर्सिंग** की प्राचार्य **डॉ. अजीथा डी.एस.** ने कहा कि निःसन्देह हमारी पुरातन मेधा ज्ञान–प्रज्ञा युक्त थी। लोकमंगलकारिणी थी। मानवमात्र का कल्याण करने वाली थी, परन्तु आज का जो हमारा समाज है वह इन आदर्शों से विमुख हो चुका है। हमें भौतिक विकास की दौड़ में अपनी संस्कृति एवं परम्परा की डोर को पकड़कर दौड़ना होगा, तभी हम संस्कार युक्त विकसित सौर सभ्य भविष्य का निर्माण कर सकेंगे। कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष **डॉ. सुबोध कुमार मिश्र** ने किया। जूम एप पर आयोजित इस व्याख्यान कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी शिक्षक उपस्थित रहे। इस अवसर पर गणित विभाग के शिक्षकों और विद्यार्थियों की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण महाविद्यालय के यू–ट्यूब चैनल एवं फेसबुक पर भी किया गया। जहाँ सैकड़ों की संख्या में प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

Smisra

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी